भारत का प्रजातियाँ व जनजातियाँ

डॉ. बी.एस. गुहा ने 1944 ई. में भारतीय जनसमूह को 6 बड़े और 9 छोटे भागों में बाँटकर देखा है-

(1) नीग्रो

(2) प्रोटो-आस्ट्रेलायड

(3) मंगोलायड (i) पुरा-मंगोलायड (ii) तिब्बती मंगोलायड

(4) भूमध्यसागरीय (i) पुरा-भूमध्यसागरीय (ii) भूमध्य सागरीय (iii) प्राच्य

(5) ब्रैकिसेफल (विशाल सिर वाले पश्चिमी लोग) (i) अल्पाइन (ii) अल्पीनायड (iii) डिनॉरिक्स

(6) नॉर्डिक

भारत में पाए जाने वाले नीग्रिटो, प्रोटो-आस्ट्रेलायड व मंगोलायड प्रजातियों के लोग आदिवासी जनजातियों के अंतर्गत आते हैं।

1. **नीग्रिटो :** अंडमान-निकोबार एवं त्रावनकोर व कोचीन की पहाड़ियों में पाई जाती हैं।

2. **प्रोटो-आस्ट्रेलायड :** ये मध्य एवं द. भारत की कबीलाई जनजातियों की प्रजातियाँ हैं।

3. **मंगोलायड :** (क) पुरा-मंगोलायड (i) लंबा सिर वाला (ii) चौड़ा सिर वाला (असम और हिमालय क्षेत्र)

(ख) तिब्बती-मंगोलायड-लेह, लद्दाख

विकसित प्रजातियों के अंतर्गत पुरा-भूमध्यसागरीय, भूमध्यसागरीय, प्राच्य, नॉर्डिक एवं प. लघु कापालिक लोग आते हैं।

1. पुरा-भूमध्यसागरीय-दक्षिण भारत एवं उत्तर भारत की निम्न जातियाँ दीर्घ कापालिक होते हैं।
2. भूमध्यसागरीय-उत्तर भारत की उच्च जातियाँ।
3. प्राच्य-पंजाब, राजस्थान, सिंध, गुजरात, महाराष्ट्र आदि के लोग।
4. प. लघु कापालिक-दक्षिणी बलूचिस्तान, सिंध, गुजरात, महाराष्ट्र में पाए जाते हैं।
5. नॉर्डिक-उत्तर-पश्चिम भारत के लोग।

भारत में आने वाला सबसे पहला प्रजाति समूह नीग्रो था। उसके पश्चात क्रमशः प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड एवं भूमध्यसागरीय प्रजातियों का आगमन हुआ। इन्हीं दोनों प्रजातियों ने मिलकर हड़प्पा सभ्यता की शुरुआत की। नॉर्डिक प्रजाति भारत में सबसे अंत में आई। ये सभी प्रजातियाँ अपने प्रजातीय गुणों के आधार पर एक दूसरे से अलग होते हैं। इन प्रजातीय गुणों में बालों का रंग व स्वरूप, कपाल संरचना, नासिका सूचकांक, आँखों का रंग व आकार शारीरिक ढाँचा, त्वचा का रंग, रक्त समूह आदि आते हैं। वस्तुतः भारत में प्रजातियों का अत्यधिक मिश्रण हुआ है एवं एक प्रकार से यहाँ भारतीय प्रजाति का विकास हो गया है, यद्यपि प्रजातीय गुण कुछ हद तक इनकी मूल विशेषताओं को प्रकट करते हैं।

भारत की प्रमुख जनजाति क्षेत्र

चंदा समिति ने 1960 ई. में आदिम या अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत किसी भी जाति या समुदाय को सम्मिलित किए जाने के मुख्य 'पाँच मानक' निर्धारित किए थे। इनमें भौगोलिक एकाकीपन, विशिष्ट संस्कृति, आदिम जाति के लक्षण, पिछड़ापन और संकोची स्वभाव शामिल है। भारत में कुल 461 जनजातियाँ हैं, जिनमें 424 अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत है। इन्हें सात क्षेत्र में बाँट सकते हैं-

1. **उत्तरी क्षेत्र :** इसके अंतर्गत जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश क्षेत्र की जनजाति है। इन जनजातियों में लाहुल, लेपचा, भोटिया, थारू, बुक्सा, जौनसारी, खम्पा, कनौटा है। इन सभी में मंगोल प्रजाति के लक्षण मिलते हैं। भोटिया अच्छे व्यापारी होते हैं तथा चीनी-तिब्बती परिवार की भाषा बोलते हैं।

2. **पूर्वोत्तर क्षेत्र :** असम, अरूणाचल, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम की जनजातियाँ इनके अंतर्गत आते हैं। दार्जिलिंग व सिक्किम में लेपचा, अरूणाचल में अपतनी, मिरी, डफला व मिश्मी, असम-मणिपुर सीमावर्ती क्षेत्र में हमर जनजाति, नागालैंड व पूर्वी असम में नागा, मणिपुर और त्रिपुरा में कुकी, मिजोरम में लुशाई आदि

जनजातियाँ आती है। अरूणाचल के तवांग में बौद्ध जनजातियाँ मोनपास, शेरदुकपेंस और खाम्पतीस रहती है। वर्तमान में चीन इस पर अपना दावा कर रहा है। नागा जनजाति उत्तर में कोनयाक, पूर्व में तंखुल, दक्षिण में कवुई, पश्चिम में रेंगमा व अंगामी एवं मध्य में लहोटा व फोम आदि उपजातियों में बँटी हुई है। मेघालय में गारो, खासी व जयंतिया जनजातियाँ मिलती है। पूर्वोत्तर क्षेत्र की सभी जनजातियों में मंगोलायड प्रजाति के लक्षण मिलते हैं। ये तिब्बती, बर्मी, श्यामी एवं चीनी परिवार की भाषा बोलती है। ये खाद्य संग्राहक, शिकारी, कृषक एवं बुनकर होते हैं।

3. **पूर्वी क्षेत्र :** इसके अंतर्गत झारखंड प. बंगाल, ओडिशा व बिहार की जनजातियाँ आती हैं। जुआंग, खरिया, खोंड, भूमिज ओडिशा की जनजातियाँ हैं। मुंडा, उराँव, संथाल, हो, बिरहोर झारखंड की जनजातियाँ हैं। पश्चिम बंगाल में मुख्यतः संथाल, मुंडा व उराँव जनजातियाँ मिलती हैं। ये सभी जनजातियाँ प्रोटो-आस्ट्रेलायड प्रजाति से सम्बंधित हैं। इनका रंग काला अथवा गहरा भूरा, सिर लंबा, नाक चौड़ी-छोटी व दबी हुई। बाल हल्के घुँघराले होते हैं। ये B रक्त-समूह के होते हैं। ये ऑस्ट्रिक भाषा परिवार के हैं तथा कोल व मुंडा भाषा बोलते हैं।

4. **मध्य क्षेत्र :** इसके अंतर्गत छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश, पश्चिमी राजस्थान व उत्तरी आंध्र प्रदेश की जनजातियाँ आती हैं। छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातियाँ गोंड, बैगा, मारिया, अबूझमारिया है। मध्य प्रदेश के मंडला जिला व छत्तीसगढ़ के बस्तर जिला में इनका संकेन्द्रण अधिक है। पूर्वी आंध्र प्रदेश में भी ये जनजातियाँ मिलती हैं। ये सभी जनजातियाँ प्रोटो-आस्ट्रेलायड से सम्बंधित हैं।

5. **पश्चिमी भाग :** इसके अंतर्गत गुजरात, राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र की जनजातियाँ आती हैं। भील, गरासिया मीना, बंजारा, सांसी व सहारिया राजस्थान की, महादेव कोली, बाली व डब्ला गुजरात की एवं पश्चिमी मध्य प्रदेश की जयन्ति है। ये सभी जनजातियाँ प्रोटो-आस्ट्रेलायड प्रजाति की हैं। ये सभी ऑस्ट्रिक भाषा परिवार की बोलियाँ बोलती हैं।

6. **दक्षिणी क्षेत्र :** इसके अंतर्गत मध्य व दक्षिणी-पश्चिमी घाट की जनजातियाँ आती हैं, जो 20^0 उत्तरी अक्षांश से दक्षिण की ओर फैली हैं। पश्चिमी आंध्र प्रदेश, कनार्टक, पश्चिमी तमिलनाडु और केरल की जनजातियाँ इसके अंतर्गत आती है। नीलगिरि के क्षेत्र में टोडा, कोटा व बदागा सबसे महत्वपूर्ण जनजातियाँ है। टोडा जनजाति में 'बहुपति विवाह प्रथा' (Polyandry) प्रचलित है। कुरूम्बा, कादर, पनियण, चेचूँ, अल्लार, नायक, चेट्टी आदि जनजातियाँ दक्षिणी क्षेत्र की अन्य महत्वपूर्ण जनजातियाँ हैं। ये नीग्रिटो प्रजाति से सम्बंधित हैं। इनका ब्लड-ग्रुप A है। ये द्रविड़ भाषा परिवार के अंतर्गत आते हैं।

7. **द्वीपीय क्षेत्र :** इसके अंतर्गत अंडमान-निकोबार एवं लक्षद्वीप समूहों की जनजातियाँ आती हैं। अंडमान-निकोबार की शोम्पेन, ओन्गे, जारवा व सेंटीनली महत्वपूर्ण जनजातियाँ हैं, जो अब धीरे-धीरे विलुप्त हो रही है। ये नीग्रिटो प्रजाति से सम्बंधित है। मछली मारना, शिकार करना, कंदमूल संग्रह आदि इनका जीवनयापन का आधार है।

भारत की जनजातियाँ

उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड की जनजातियाँ : यहाँ की प्रमुख जनजातियाँ भोटिया, थारू, बुक्सा, जौनसारी, राजी, शौका, खरवार और माहीगीर हैं। उत्तराखंड के नैनीताल में जनजातियों की संख्या सर्वाधिक है। उसके बाद देहरादून का स्थान आता है।

1. **थारू :** ये नैनीताल से लेकर गोरखपुर एवं तराई क्षेत्र में रहती है तथा किरात वंश की है। इनमें 'संयुक्त परिवार' प्रथा है। कई परिवार ऐसे भी हैं, जिनमें सदस्यों की संख्या पाँच सौ तक है।
2. **बुक्सा :** उत्तराखंड के नैनीताल, पौड़ी, गढ़वाल, देहरादून जिलों में ये पाए जाते हैं। इनका सम्बंध पतवार राजपूत घराने से माना जाता है। ये हिंदी भाषा बोलते हैं। हिन्दुओं की तरह इनमें भी 'अनुलोम' व 'प्रतिलोम' विवाह प्रचलित है।
3. **राजी अथवा बनरौत :** उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जनपद में पाई जाने वाली कोल-किरात जातियाँ हैं। ये हिन्दू हैं तथा 'झूमिंग प्रथा' से कृषि करते हैं।
4. **खरवार :** उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में निवास करने वाली यह खूंखार व बलिष्ठ जनजाति है।
5. **जौनसारी :** ये उत्तराखंड के देहरादून, टेहरी-गढ़वाल, उत्तरकाशी क्षेत्र में मिलते हैं। ये भूमध्यसागरीय क्षेत्रों से सम्बंधित हैं। इनमें **'बहुपति विवाह प्रथा'** पाई जाती है।
6. **भोटिया :** उत्तराखंड के अल्मोढ़ा, चमोली, पिथौरागढ़ और उत्तरकाशी क्षेत्रों में पाई जाने वाली ये जनजाति मंगोल प्रजाति की है तथा 'ऋतु-प्रवास' करती है।

मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ : गोंड, मुंडा, कोरकू, कोरबा, कोल, सहरिया, हल्वा, मारिया, बिरहोर, भूमियाँ, ओराँव, मीना आदि यहाँ की प्रमुख जनजातियाँ हैं। छत्तीसगढ़ का बस्तर जिला कुल जनजाति जनसंख्या की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। झाबुआ जिला जनजातीय जनसंख्या प्रतिशत के अनुसार सर्वोपरि है।

1. **गोंड :** भारत की जनजातियों में गोंड जनजाति सबसे बड़ी है। ये प्राक्-द्रविड़ प्रजाति की है। इनकी त्वचा का रंग काला, बाल काले, होंठ मोटे, नाक बड़ी व फैली हुई होती है। ये मुख्य: छत्तीसगढ़ के बस्तर, चांदा, दुर्ग जिलों में मिलती हैं। आंध्र प्रदेश व ओडिशा में भी इनकी कुछ जनसंख्या है।
2. **मारिया :** मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ के छिंदवाड़ा, जबलपुर और बिलासपुर जिलों में रहने वाली इस जनजाति की शरीर रचना गोंड जनजाति के समान है।
3. **कोल :** मध्य प्रदेश के रीवा सम्भाग और जबलपुर जिले में निवास करने वाली इस जनजाति का मुख्य पेशा 'कृषि' है।
4. **कोरबा :** छत्तीसगढ़ के बिलासपुर, सरगुजा और रायगढ़ जिले में निवास करने वाली जनजाति है। झारखंड राज्य के पलामू जिले में भी ये मिलती हैं। ये मुख्यत: जंगली कंद-मूल एवं शिकार पर निर्भर हैं। कुछ कोरबा कृषक भी हैं। कोरबा जनजाति का मुख्य त्योहार 'करमा' है। इनमें सर्प पूजा की प्रथा भी प्रचलित है।
5. **सहरिया :** मध्य प्रदेश के गुना, शिवपुरी व मुरैना जिलों में निवास करने वाली ये जनजातियाँ कंदमूल व शहद संग्रह कर जीविका निर्वाह करती हैं।
6. **हल्वा :** छत्तीसगढ़ के रायपुर व बस्तर जिलों में निवास करने वाली जनजाति। इनकी बोली में मराठी भाषा के शब्दों का अधिक प्रयोग होता है। ये लोग कृषक हैं।
7. **कोरकु :** यह भी मुंडा या कोलेरियन जनजाति की शाखा है तथा मध्य प्रदेश के निमाड़, होशंगाबाद, बैतूल, छिंदवाड़ा जिलों में निवास करती है। ये कृषक हैं।

राजस्थान की जनजातियाँ : राजस्थान के दक्षिण-पूर्व व दक्षिणी क्षेत्र में यहाँ की अधिकांश जनजातीय आबादी निवास करती है। यहाँ की जनजातियों में भील, मीणा, सहरिया, गरासिया, दमोर, सांसी आदि प्रमुख हैं।

1. **मीणा :** राजस्थान में इस जनजाति की सर्वाधिक संख्या पाई जाती है। ये मुख्यत: जयपुर, सवाई माधोपुर, उदयपुर, अलवर, चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी व डूंगरपुर जिलों में रहते हैं। पौराणिक मान्यताओं के आधार पर इस जनजाति का

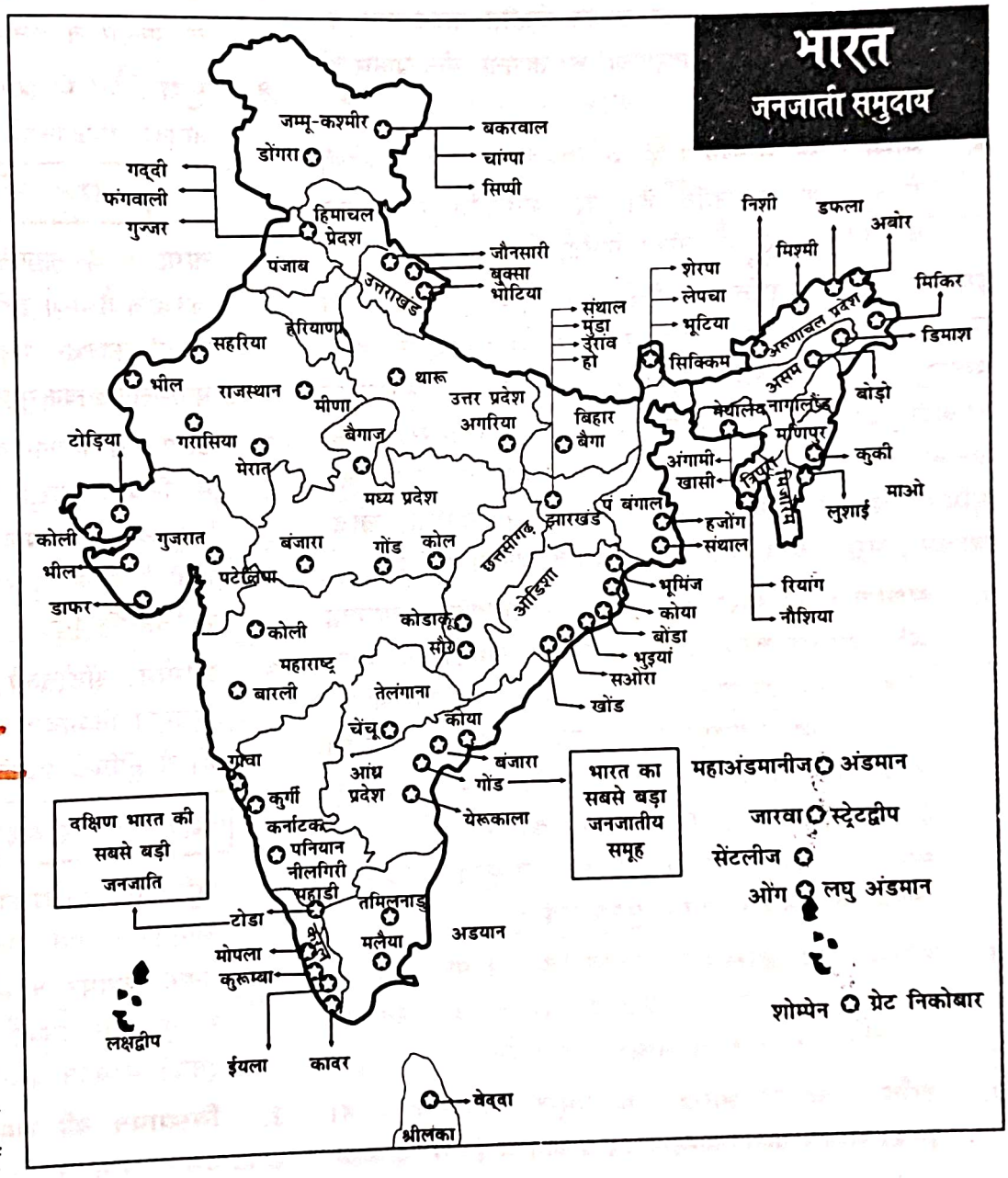

सम्बंध भगवान मत्स्यावतार से है। मीणा जनजाति शिव व शक्ति के उपासक हैं।

2. **भील :** ये राजस्थान की द्वितीय प्रमुख जनजाति है तथा बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, सिरोही, चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा जिलों में निवास करती हैं। भील का अर्थ है 'धनुषधारी'। ये स्वयं को महादेव की संतान मानती हैं। भील जनजाति प्रोटो-आस्ट्रेलायड प्रजाति की हैं। इनका कद छोटा व मध्यम, आँखें लाल, बाल रूखे व जबड़ा कुछ बाहर निकला हुआ होता है। भीलों में संयुक्त परिवार प्रथा प्रचलित है। ये सामान्यतः 'कृषक' हैं।

3. **गरासिया :** मीणा व भील के बाद राजस्थान की तीसरी प्रमुख जनजाति है। ये मुख्यतः दक्षिणी राजस्थान में रहते हैं। ये चौहान राजपूतों के वंशज हैं परंतु अब भीलों के समान आदिम प्रकार का जीवन व्यतीत करने लगे हैं। इनमें 'मोर बंधिया', 'पहरावना' व 'ताणना' तीन प्रकार के विवाह प्रचलित हैं।

4. **साँसी :** यह राजस्थान के भरतपुर जिले में रहने वाली खानाबदोश जनजाति है। यह जनजाति स्वयं को बाल्मिकियों से भी नीचा मानती है।

झारखंड की जनजातियाँ : राँची, संथाल परगना व सिंहभूम जिलों में जनजातियों की संख्या सर्वाधिक है। देवघर, गिरिडीह, पलामू, गोड्डा, हजारीबाग, धनबाद आदि भी जनजातीय आबादी की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। झारखंड की जनजातियों में संथाल सबसे प्रमुख है। उराँव, मुंडा, हो, भूमिज, खड़िया, सौरिया पहाड़ियाँ, बिरहोर, कोरबा, खोंड, खरवार, असुर, बैगा आदि अन्य प्रमुख जनजातियाँ हैं।

1. **संथाल :** यह भारत की एक प्रमुख जनजाति व झारखंड की सर्वप्रमुख जनजाति है। यह बंगाल, ओडिशा व असम राज्यों में भी पाई जाती है। ये झारखंड में मुख्यतः संथाल परगना, राँची, सिंहभूम, हजारीबाग, धनबाद आदि जिलों में रहते हैं। संथाल आस्ट्रेलॉयड और द्रविड़ प्रजाति के होते हैं। ये 'मुंडा' भाषा बोलते हैं व प्रकृतिपूजक हैं। इनका मुख्य व्यवसाय आखेट, कंदमूल संग्रह व कृषि है। 'ब्राह्मण, सोहरई व सकरात' इनके मुख्य पर्व है।

2. **कोरबा :** ये झारखंड के पलामू जिले में पाई जाती हैं। मध्य प्रदेश में भी ये निवास कर रहे हैं। यह जनजाति कोलेरियन जनजाति से सम्बंध रखती है।

3. **उराँव :** यह भी झारखंड की प्रमुख जनजातियों में है। इनका सम्बंध प्रोटो-आस्ट्रेलायड प्रजाति से है। ये 'कुरूख' भाषा बोलते हैं, जो मुंडा भाषा से मिलती-जुलती है। ये मुख्यतः संथाल परगना व रोहतास जिलों में रहते हैं। शिकार, मछली मारना व कृषि इनका व्यवसाय है।

4. **असुर :** ये मुख्यतः सिंहभूम जिले में रहते हैं। ये भी प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड प्रजाति से सम्बंधित हैं। ये मुंडा वर्ग की 'मालेटा' भाषा बोलते हैं। लोहा गलाना, शिकार, मछली मारना, खाद्य संग्रह व कृषि इनका मुख्य व्यवसाय है।

5. **सौरिया पहाड़िया :** संथाल परगना, गोड्डा, राजमहल आदि जिलों में निवास करने वाली ये कृषक जनजाति हैं।

6. **पहाड़ी खड़िया :** सिंहभूम जिले की पहाड़ियों में निवास करने वाली यह जनजाति खाद्य संग्रह, बागवानी व कृषि पर निर्भर है।

7. **खरवार :** यह लड़ाकू व वीर जनजाति है तथा झारखंड के पलामू व हजारीबाग जिले में मिलती है।

8. **मुंडा :** यह भी झारखंड की प्रमुख जातियों में से है। इनकी अनेक उपजातियाँ हैं।

भारत की अन्य जनजातियाँ

1. **नागा :** ये नागालैंड, मणिपुर व अरूणाचल प्रदेश की जनजाति है तथा इंडो-मंगोलायड प्रजाति से सम्बंध रखती है। ये अधिकांशतः नग्नावस्था में घूमते हैं। कृषि, पशुपालन व मुर्गीपालन इनका मुख्य व्यवसाय है। ये 'झूमिंग कृषि' करते हैं।

2. **टोडा :** ये तमिलनाडु की नीलगिरि व उटकमंडक पहाड़ियों में निवास करने वाली जनजाति है। इनका सम्बंध 'भूमध्यसागरीय प्रजाति' से है। ये हृष्ट-पुष्ट, सुंदर व गोरी होती है। इनका मुख्य व्यवसाय पशुचारण है। टोडा जनजाति में 'बहुपति विवाह प्रथा' प्रचलित है।

3. **शोम्पेन, सेंटीनली, ओंगे व जारवा जनजाति :** ये अंडमान निकोबार की विलुप्त होती जा रही जनजातियाँ हैं। ये नीग्रिटो प्रजाति से सम्बंधित हैं।

भारत में जनजातीय क्षेत्रों की समस्याएँ

1. **भूमि पर अधिकारों में आती कमी :** अंग्रेजों के आगमन के पूर्व भूमि पर उनका पूर्ण अधिकार था, परंतु उनके आगमन व स्वतंत्रता के पश्चात् तथा वन कानूनों से भूमि पर उनका अधिकार छिनता चला गया, जिनसे इनकी संस्कृति प्रभावित हुई।

2. **विस्थापन की समस्या :** विभिन्न विकास योजनाओं उद्योग धंधों के निर्माण के कारण से जनजातियों पर

विपरीत असर पड़ा है तथा वे बड़ी संख्या में विस्थापित होने को बाध्य हुए हैं।

3. **गैर-आदिवासी जनसंख्या का प्रभाव :** आदिवासी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ती गैर-आदिवासी जनसंख्या से उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति प्रभावित हुई है तथा उनमें जनांकिकी परिवर्तन हुए हैं। महाजनी शोषण बढ़ने से वे कर्ज के जाल में फँस गए हैं, जिनकी काफी तीखी प्रतिक्रिया भी हुई है तथा इस क्षेत्र में अशांति का वातावरण बना है। आदिवासी क्षेत्रों में उसका जनांकिकी संतुलन भी बिगड़ रहा है। 1961 ई. में झारखंड क्षेत्र में कुल आदिवासी जनसंख्या लगभग 50% था, जो 1991 ई. में 29% तक पहुँच गया।

4. **लिंग-आधारित समस्या :** गैर आदिवासियों द्वारा सामाजिक-आर्थिक शोषण के कारण आदिवासी महिलाओं के शोषण की समस्या उभरी है।

5. **सांस्कृतिक विलगाव :** विस्थापन, जनांकिकी परिवर्तन आदि के कारण सांस्कृतिक रूप से उनकी प्राकृतिक जीवन-शैली पर असर पड़ा है, जिनसे ये जनजातियाँ प्रभावित हुई हैं।

6. **शिक्षा सम्बंधी समस्या :** विभिन्न जनजातियों में निरक्षरता अभी भी है, जिससे उनमें रूढ़िवादिता है। साक्षरता व शिक्षा के अभाव के कारण उनकी श्रम उत्पादकता का मूल्य कम है तथा वे महाजनी शोषण का भी शिकार हो जाते हैं।

समाधान

स्वतंत्रता के पश्चात् से ही आदिवासियों के विकास हेतु विभिन्न योजनाएँ बनाई जाती रही हैं, परंतु पाँचवीं योजना में जनजातीय उप-योजना के आने के पश्चात् इस प्रक्रिया में तेजी आई है। इसके तहत समेकित जनजातीय विकास कार्यक्रम (Integrated Tribal Development Programme – ITDP) के अंतर्गत 193 परियोजना चलाई जा रही है, जिससे 50% जनजातीय जनसंख्या लाभान्वित हो रही है। ये जिला व विकास प्रखंडों में चल रहे हैं। संशोधित क्षेत्र विकास अभिकरण (Modified Area Development Agency –MADA) के अंतर्गत 249 परियोजनाएँ ऐसे केन्द्रों में चलाई जा रही है, जहाँ की अधिकतम जनसंख्या 10,000 तक हो तथा 50% से अधिक जनसंख्या जनजातीय हो। आदिम जनजातीय समूह के विकास के लिए 74 जनजातियों को पहचाना गया है तथा इनके लिए 14 राज्यों एवं केन्द्रशासित राज्यों में सूक्ष्म परियोजनाएँ चलाई जा रही हैं।

जनजातीय उत्पादन के विपणन के लिए TRIFED (Tribal Federation) बनाया गया है, जो उन्हें उनके उत्पादन का लाभप्रद मूल्य उपलब्ध करता है। स्थानीय संसाधनों के आधार पर जनजातियों के विकास को गरीबी निवारण कार्यक्रम व समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम (IRDP) का अंग बनाया गया है। उनमें शिक्षा के विकास के साथ-साथ उन्हें महाजनी शोषण से बचाने का प्रयास किया जा रहा है तथा उनकी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने पर बल दिया जा रहा है।

प्रस्तावित नई राष्ट्रीय जनजाति नीति 'नेहरूवियन एप्रोच' पर आधारित है। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, पुनर्वास, भूमि-जुड़ाव पर जोर दिया गया है। जनजातीय भाषा का संरक्षण व लेखांकन, प्राथमिक स्तर पर उनको मातृभाषा में शिक्षा को प्रोत्साहन, संयुक्त वन प्रबंधन में जनजातीय भागीदारी को प्रोत्साहन देना शामिल है। जनजातियों को सूचना का अधिकार प्रदान किया गया है, ताकि वे ग्रामीण स्तर पर भूमि-दस्तावेजों से सम्बंधित सूचनाएँ प्राप्त कर सकें। अनुसूचित जनजाति और वनवासी अधिकार विधेयक के अंतर्गत जनजातियों के भूमि सम्बंधी अधिकारों को बढ़ाया गया है। मध्य प्रदेश के अमरकंटक में 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय' खोला गया है, जो जनजातियों से सम्बंधित विभिन्न अध्ययनों पर केन्द्रित होगा। इससे उनकी विशेषताओं के सम्बंध में जागरूकता बढ़ेगी तथा संवेदनशील प्रयासों के द्वारा उन्हें मुख्य धारा में लाना संभव होगा।

वनबंधु कल्याण योजना

केंद्रीय जनजातीय कल्याण मंत्री श्री जुआल ओरांव ने 28 अक्टूबर, 2014 को वनबंधु कल्याण योजना आरंभ किया। इस स्कीम का उद्देश्य देश की जनजातीय जनसंख्या की बुनियादी संरचना व मानव विकास सूचकांकों में सुधार करना है। इस स्कीम को गुजरात की तर्ज पर तैया की गई है। इस स्कीम के अंतर्गत उन सभी ब्लाकों को 10 करोड़ रुपए उपलब्ध कराया जाएगा। जहाँ जनजातीय जनसंख्या 33% से अधिक है।

आदिशिल्प

भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ लिमिटेड द्वारा नई दिल्ली में 20-30 नवम्बर, 2014 के बीच जनजातीय हस्तशिल्प मेला 'आदिशिल्प' आयोजित हुआ।

वनज 2015

'वनज 2015' के नाम से भारत का प्रथम राष्ट्रीय जनजातीय उत्सव 13-18 फरवरी, 2015 के बीच नई दिल्ली में आयोजित हुआ। इस उत्सव का आयोजन केंद्रीय जनजातीय कल्याण मंत्रालय द्वारा किया गया।